मार्च 2024 वर्ष 3, अंक 3

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.– मासिक समाचार

"इक्कीसवी सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए, गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा का ज़रूरी उद्देश्य, अच्छे, चिंतनशील, बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना होना चाहिए। यह एक व्यक्ति को एक या एक से अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में गहन स्तर पर अध्ययन करने में सक्षम बनाती है, और साथ ही चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा की भावना और विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, भाषा, साथ ही व्यावसायिक, तकनीकी और व्यावसायिक विषयों सहित विभिन्न विषयों में 21वीं सदी की क्षमताओं को विकसित करती है। उच्चतर गुणवत्ता वाली शिक्षा द्वारा व्यक्तिगत उपलब्धि और ज्ञान, रचनात्मक सार्वजनिक सहभागिता और समाज में उत्पादक योगदान को सक्षम करना चाहिए। इसे छात्रों को अधिक सार्थक और संतोषजनक जीवन और कार्य भूमिकाओं के लिए तैयार करना चाहिए और आर्थिक स्वतंत्रता को सक्षम करना चाहिए।"

–राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) का पैरा 9.1.1

खंड

खंड क : डी.ई.आई. 3

खंड ख : डी.ईआई. – ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा 7

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AAADEIs & AAFDEI) 11

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट का पर्ड्यू यूनिवर्सिटी और यूनिवर्सिटी ऑफ कनेटिकट (यू.एस.ए) के साथ पार्टनरशिप एग्रीमेण्ट पर हस्ताक्षर 3

2. एल्युमनाई कनेक्ट 2024 का आयोजन 3

3. मिजान नॉलेज फॉर चेंज (K4C) हब के प्रतिनिधिमंडल ने डी.ई.आई. का दौरा किया 4

4. 'अमृत काल विमर्श', डीईआई छात्रों के साथ आयोजित एक विकास संवाद 5

5. संकाय समाचार 5
   विज्ञान विभाग 5
   शिक्षकोपलब्धि 5

6. सामाजिक विज्ञान संकाय
   'टेकवेंचर 2024'–स्टार्ट–अप विचारों पर छात्रों की प्रतियोगिता आयोजित की गई 6
   शिक्षकोपलब्धि 6

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

7. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 7
8. सूचना केन्द्रों से समाचार 8
   करोल बाग केंद्र ने कैमेलिड्स के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष का जश्न मनाया 8
   डी.ई.आई. सूचना केंद्रों में संस्थापक दिवस समारोह 8
   बेंगलुरु सेंटर में उत्पाद प्रदर्शनी–2024 का आयोजन किया गया 9
   गादीरास (सुकमा) में बसंत Sports का आयोजन 10
   अटलांटा सेंटर में बसंत समारोह 2024 10

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

9. संपादक की डेस्क से 11

10. दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट पूर्व छात्र मिलन समारोह–2024 11

11. डी.ई.आई. की मेरी यादें 12

12. सखी बोलती है: मेरा दूसरा जन्म और धन्य जीवन 13
    प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड ....

खंड क : डी.ई.आई.

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट का पर्ड्यू यूनिवर्सिटी और यूनिवर्सिटी ऑफ कनेटिकट (यू.एस.ए) के साथ पार्टनरशिप एग्रीमेण्ट पर हस्ताक्षर

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 ने 23 जनवरी, 2024 को पर्ड्यू यूनिवर्सिटी, वेस्ट लाफायेट, इंडियाना, यू.एस.ए और कनेटिकट यूनिवर्सिटी, स्टॉर्स, कनेटिकट, यू.एस.ए के साथ एक आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। एक प्रतिनिधिमंडल में डॉ. इंद्रजीत चौबे, डीन, कृषि, स्वास्थ्य और प्राकृतिक संसाधन महाविद्यालय, कनेटिकट विश्वविद्यालय, डॉ. बर्नार्ड एंजेल, ग्लेन डब्ल्यू. सैंपल, डीन ऑफ एग्रीकल्चर, पर्ड्यू विश्वविद्यालय, श्रीमती एंजेल (डॉ. एंजेल की पत्नी) शामिल थे। और पर्ड्यू विश्वविद्यालय के कृषि और जैविक इंजीनियरिंग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. धर्मेंद्र सारस्वत ने 22 और 23 जनवरी, 2024 को डी.ई.आई. का दौरा किया।

प्रतिनिधिमंडल ने संस्थान का भ्रमण किया और डी.ई.आई. यमुना नदी पुनर्स्थापना स्थल (वैकुंठ धाम/स्वर्ग धाम), पोइया घाट, आगरा की अत्यधिक सराहना की। उन्होंने दयालबाग़ के एग्रोइकोलॉजी–कम–प्रिसिजन फार्मिंग फील्ड, दयालबाग़ कॉलोनी, गौशाला, डेयरी कॉम्प्लेक्स एवं परिसर में विभिन्न प्रयोगशालाओं और सुविधाओं को भी देखा। डी.ई.आई. के संकाय और छात्रों ने प्रौद्योगिकी और उद्यमिता में कई नवाचारों का प्रदर्शन किया जिसने प्रतिनिधिमंडल को प्रभावित किया। कई सामान्य आधारों और आपसी हितों पर चर्चा की गई, जिनमें दीर्घकालिक सहयोग की संभावना है। भ्रमण के दूसरे दिन की शाम को, पर्ड्यू विश्वविद्यालय के साथ एक आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए गए, जिसमें दोनों विश्वविद्यालय विभिन्न क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियों को प्रोत्साहित करने पर सहमत हुए हैं। कनेटिकट विश्वविद्यालय के साथ सहयोग के एक समझौते पर भी हस्ताक्षर किए गए, जिसके अनुसार विश्वविद्यालय संयुक्त शैक्षणिक और वैज्ञानिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए सहमत हुए हैं।

आशय पत्र और क्रमशः पर्ड्यू विश्वविद्यालय और कनेटिकट विश्वविद्यालय के साथ सहयोग के समझौते पर परम श्रद्धेय प्रोफेसर प्रेम सरन सतसंगी साहब, अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति (एक प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्य करने वाली एक non-statutory निकाय) की गरिमामयी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए।

एल्युमनाई कनेक्ट 2024 का आयोजन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 ने 10 फरवरी, 2024 को अपनी एल्युमनाई मीट 'एल्युमनाई कनेक्ट 2024' मनाई। सभा के दौरान कॉन्फ्रेंस सैटिंग में पारंपरिक से परे, नदी के किनारे की प्राकृतिक सुंदरता को अपनाया गया। डी.ई.आई. के छात्रों ने यमुना नदी के पुनरुद्धार और शुद्धिकरण के प्रयासों के माध्यम से प्रकृति के संरक्षण और सुरक्षा के प्रति अपने समर्पण की पुष्टि की। जैसा कि व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है, दयालबाग़ प्रशासन, वैकुंठ धाम, पोइया घाट, आगरा में यमुना नदी को शुद्ध करने और पुनर्जीवित करने के लिए एक अभियान चला रहा है। इस पहल ने इस स्थान को एक सुंदर स्थल में बदल दिया है, जहाँ सुबह और शाम के समय पर्यटकों की भीड़ उमड़ती है।

विशेष रूप से, एल्युमनाई कनेक्ट 2024 में भाग लेने वाले पूर्व छात्रों ने उत्साहपूर्वक इस नेक कार्य में योगदान दिया। पूरी कार्यवाही के दौरान, शिक्षा सलाहकार समिति (दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थानों के लिए एक प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्यरत एक non-statutory निकाय) के अध्यक्ष, परम श्रद्धेय प्रोफेसर प्रेम सरन सतसंगी साहब ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाई और सभी उपस्थित लोगों पर असीम मेहर और दया प्रदान की।

कई प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों, दोनों पुरुषों और महिलाओं, ने संस्थान में अपने अनुभवों को याद किया, शिक्षा की गुणवत्ता और डी.ई.आई. द्वारा पोषित जीवन शैली की सराहना की। परम आदरणीय श्रीमती सत्यवती सतसंगी जी ने विशेष रूप से, दयालबाग़ के शैक्षिक ढांचे और शिक्षाशास्त्र के लिए गहरी प्रशंसा व्यक्त की और व्यापक छात्र विकास को बढ़ावा देने के लिए संस्थान की अद्वितीय प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

पद्म श्री पुरस्कार विजेता डॉ. राधे श्याम पारीक, एक प्रसिद्ध होम्योपैथिक डॉक्टर, ने अपने जीवन की सभी उपलब्धियों का श्रेय आर.ई.आई. इंटरमीडिएट कॉलेज, दयालबाग़ में अपनी प्राथमिक शिक्षा से शुरू करके डी.ई.आई. में प्राप्त शिक्षा को दिया। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत और व्यावसायिक यात्रा पर दयालबाग़ के धार्मिक गुरुओं द्वारा विकसित आध्यात्मिक और धार्मिक वातावरण के गहरे प्रभाव पर प्रकाश डाला। इसी तरह, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष प्रोफेसर दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कई अन्य लोगों द्वारा बताई गई ऋणग्रस्तता की भावनाओं को दोहराते हुए, डी.ई.आई. के साथ अपने सहयोग के लिए गहरा आभार व्यक्त किया। दयाल मोटर्स, आगरा के मुख्य महाप्रबंधक डॉ. अर्श धीर ने इन भावनाओं को दोहराया, इस बात पर जोर दिया कि डी.ई.आई. द्वारा प्रदान किए गए शैक्षिक अनुभव अद्वितीय हैं। अन्य उल्लेखनीय उपस्थितगण, जैसे, प्रतिष्ठित वैश्विक प्रकाशन कंपनी स्प्रिंगर नेचर के प्रबंध निदेशक श्री वेंकटेश सर्वसिद्धि, कनाडा के वेस्टर्न ओंटारियो विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ. अपूर्व नारायण और प्रोफेसर पी.के. कालरा, वरिष्ठ प्रोफेसर, आई.आई.टी. दिल्ली के साथ एक्सेंचर, भारत के प्रबंध निदेशक श्री सरन प्रसाद, डी.ई.आई. के सभी पूर्व छात्र भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए और संस्थान पर अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का समापन डी.ई.आई. के छात्रों द्वारा एक जीवंत सांस्कृतिक प्रस्तुति के साथ हुआ, जिसका समापन विश्वविद्यालय गीत की प्रस्तुति के साथ हुआ।

मिजान नॉलेज फॉर चेंज (K4C) हब के प्रतिनिधिमंडल ने डी.ई.आई. का दौरा किया

मिजान नॉलेज फॉर चेंज (K4C) हब, यूनिवर्सिटी सेन्स इस्लाम मलेशिया (यू.एस.आई.एम.) के प्रतिनिधियों के एक समूह ने 21 फरवरी 2024 को दयालबाग़ (K4C) हब, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 का दौरा किया। यू एस आई एम में मिजान K4C हब एशिया क्षेत्र में समुदाय–आधारित भागीदारी अनुसंधान (सी बी पी आर) और मेंटर ट्रेनिंग प्रोग्राम (एम टी पी) के लिए यूनेस्को नॉलेज फॉर चेंज कंसॉर्टियम के समन्वय के लिए कार्यरत है। प्रतिनिधियों में

यूनेस्को (K4C) ग्लोबल कंसॉर्टियम के क्षेत्रीय समन्वयक (एशिया) और यू एस आई एम में सहायक कुलपति (रणनीतिक योजना और कॉर्पोरेट संचार) डॉ. महजान अब्दुल मुतालिब शामिल थे। अन्य तीन प्रतिनिधि थे, इंटरनेशनल यूथ सेंटर (आई वाई सी), मलेशिया से डॉ. जडजरिल जाफर और डॉ. हाजिला कमरुद्दीन और नॉलेज फॉर चेंज (K4C) ग्लोबल कंसॉर्टियम, एशिया में पार्टिसिपेटरी रिसर्च, नई दिल्ली में स्थित (पी आर आई ए) की समन्वयक सुश्री रुचिका राय।

आने वाले प्रतिनिधियों का उद्देश्य दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट की सामुदायिक सहभागिता उपक्रमों को देखना और उन पर विचारों का आदान–प्रदान करना था। उन्होंने कृषि–पारिस्थितिकी–सह–सटीक कृषि क्षेत्र, डेयरी, वैकुंठ धाम में यमुना नदी के पुनरुद्धार और पुनर्स्थापना स्थल, शिक्षा विद्यालय, हस्तशिल्प तकनीकी प्रशिक्षण सह ऊष्मायन केंद्र का दौरा किया और जीवन भर सीखने और विस्तार गतिविधियों, स्वयं सहायता के बारे में भी सीखा। समूह, ग्रामीण समुदायों में सामाजिक–राजनीतिक संवेदीकरण, आदि। समुदाय–आधारित भागीदारी अनुसंधान के लिए योजनाओं और अवसरों सहित डी.ई.आई. की सामुदायिक भागीदारी पहल के संबंध में एक उपयोगी हाइब्रिड मोड बातचीत आयोजित की गई। उन्हें उन्नत भारत अभियान के तहत किए जा रहे कार्यों, निःशुल्क एकीकृत चिकित्सा और ग्रामीण सहायता शिविरों, राजाबरारी, मध्य प्रदेश में आदिवासी और ग्रामीण लोगों के उत्थान के लिए की गई पहल आदि से भी अवगत कराया गया। प्रोफेसर ज्योति गोगिया, समन्वयक, दयालबाग़ (K4C) हब, डी.ई.आई., प्रो. रूपाली सतसंगी, और डॉ. सोना दीक्षित, मेंटर्स, दयालबाग (K4C) हब, डी.ई.आई. ने इस यात्रा का आयोजन किया।

'अमृत काल विमर्श', डीईआई छात्रों के साथ आयोजित एक विकास संवाद

यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यूज़ सैल (cell), दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के अमृत काल विमर्श उपक्रम के तहत 5 मार्च, 2024 को 'अन्हर्ड वॉइसेस एंड सोशल डेवलपमेंट इन द इंडियन कॉन्टेक्स्ट' शीर्षक से एक विकास संवाद का आयोजन किया। भारत सरकार, विकसित भारत @2047 के दृष्टिकोण के अनुरूप है। दिन के वक्ता और सूत्रधार डॉ. ईश्वर स्वरूप सहाय, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान विभाग, डी.ई.आई. थे। डॉ. सहाय ने छात्रों को विकसित भारत @2047 के दृष्टिकोण से परिचित कराया, जिसका उद्देश्य स्वतंत्रता के 100वें वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलना है। उन्होंने युवाओं की आवाज के महत्त्व और इस ऊंचे मिशन में उनकी भूमिका पर भी प्रकाश डाला। व्याख्यान के बाद छात्रों के साथ सक्रिय चर्चा हुई। कार्यक्रम के दर्शकों में विभिन्न संकायों और पृष्ठभूमियों के 180 युवा छात्रों का समूह था। छात्रों को समन्वयक प्रो. के. शांति स्वरूप और यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यूसेल, डी.ई. आई. के सदस्य सचिव डॉ. रोहित राजवंशी ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यूज़ सैल की सह–समन्वयक डॉ. सोना दीक्षित ने किया।

संकाय समाचार

विज्ञान विभाग

शिक्षकोपलब्धि:

भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर सुखदेव रॉय और आई क्यू ए सी, डी.ई.आई. के सचिव प्रोफेसर सौरभ मणि ने 2 फरवरी, 2024 को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश में 'इम्प्लीमेंटेशन एन ई पी 2020' पर मध्य क्षेत्र के कुलपतियों के सम्मेलन में भाग लिया। उन्होंने क्रमशः शासन और स्वायत्तता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों की क्षमता निर्माण पर बहुमूल्य सुझाव दिए, जिन्हें अंतिम अनुशंसाओं में शामिल किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन माननीय श्री मंगू भाई

पटेल, राज्यपाल, मध्य प्रदेश द्वारा किया गया और अध्यक्षता प्रो. एम. जगदीश कुमार, अध्यक्ष, यू जी सी, नई दिल्ली ने की।

सामाजिक विज्ञान संकाय

‘टेकवेंचर 2024’–स्टार्ट–अप विचारों पर छात्रों की प्रतियोगिता आयोजित की गई

प्रबंधन विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, डी.ई.आई. ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एस एस आर), नई दिल्ली और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (एम एस एम ई), आगरा कार्यालय के साथ मिलकर छात्रों के लिए उद्यमिता जागरूकता अभियान का आयोजन किया – मूलतः 9 मार्च, 2024 को, ''टेकवेंचर 2024'' के एक भाग के रूप में – स्टार्ट–अप विचारों पर छात्रों की एक प्रतियोगिता। इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य एम एस एम ई और डिजिटलीकरण की पहल पर प्रकाश डालना था। इस कार्यक्रम में संस्थान के विभिन्न विभागों से 220 छात्रों ने पंजीकरण कराया और उनके अलावा लगभग 40 छात्र समन्वयकों ने कार्यक्रम के उचित संचालन के लिए शिक्षकों के मार्गदर्शन में विभिन्न तरीकों से योगदान दिया। टेकवेंचर प्रतियोगिता के माध्यम से, छात्रों को अपने उद्यमशील विचारों को अनुभवी उद्योग पेशेवरों के सामने प्रस्तुत करने का अवसर मिला, जिसके परिणाम 12–13 अप्रैल, 2024 को दो दिवसीय कार्यशाला में घोषित किए जाएंगे। श्री ब्रिजेश यादव, भारतीय उद्यम विकास के उप निदेशक सेवा (आई ई डी एस), श्री सुशील कुमार, आई ई डी एस के सहायक निदेशक, सी ए विनय कुमार मडेतवाल और श्री अचिंत्य शर्मा (सी ई ओ, अमियाच टेक्नोलॉजीज़ प्राइवेट लिमिटेड) सत्र के मुख्य वक्ता थे। प्रोफेसर सुमिता श्रीवास्तव समग्र कार्यक्रम समन्वयक थीं, उनके साथ डी.ई.आई. के सामाजिक विज्ञान संकाय की सदस्य डॉ. जसप्रीत कौर, डॉ. श्वेता खेमानी और डॉ. हंस कौशिक भी थे।

शिक्षकोपलब्धि

प्रोफेसर सुमिता श्रीवास्तव, प्रबंधन विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, डी.ई.आई., ने अपने विभाग के शोधार्थियों, जाग्रति असीजा और पूजा केवलरमानी के साथ, 08 से 10 फरवरी तक भारतीय प्रबंधन संस्थान, बोधगया द्वारा 'Mindfulness for Sustainable Business and Innovation' विषय पर आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च कॉन्फ्रेंस ऑन माइंडफुलनेस (आई आर सी एम) 2024 में 'Preliminary Investigations on Spirituality at Work: Bridging Ethical Leadership, Employee Consciousness, and Workplace Behaviour' शीर्षक से सर्वश्रेष्ठ पेपर प्रस्तुति के लिए पुरस्कार प्राप्त किया। उन्होंने 23 और 24 फरवरी, 2024 को उत्तर प्रदेश के कानपुर में प्राणवीर सिंह इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (पी एस आई टी) कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन द्वारा 'India a $5 Trillion Economy: Challenges and Gateways' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक सत्र की अध्यक्षता भी की।

खंड खः डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई, 2020 को लॉन्च (launch) की गयी।

इंग्लैंड की कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी ने इस नीति की सराहना की और तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' को शिक्षा का नेतृत्व करते हुए एक 'सुसंगत और लचीले शिक्षा सिस्टम' के निर्माण के लिए सम्मानित क्रिया एवं एन ई पी 2020 के माध्यम से सतत् शिक्षा और उनकी प्रतिबद्धता के लिए उनकी सराहना की। आगे कहा कि पिछले सात दशकों से भारत में बड़े पैमाने पर शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। अब, हाल ही में लॉन्च किए गए एन ई पी 2020 के साथ, ध्यान पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन सुधारों पर स्थानांतरित हो गया है। यह शिक्षा प्रणाली को रटने की संस्कृति से दूर वास्तविक समझ की ओर ले जाने का वादा करता है। इस नीति को भारत में शिक्षाविदों और अन्य हितधारकों द्वारा खूब सराहा गया है और इसे काफी प्रभावी ढंग से लागू किया जा रहा है।

उदाहरण के लिये, मैं डिग्री–स्तरीय स्नातक (यू जी) कार्यक्रमों को चुनूंगा जिनमें एन ई पी 2020 ने काफी लचीलापन पेश किया है, जैसा कि नीचे वर्णित हैः

> जबकि पहले, यू जी कार्यक्रम 3 साल की अवधि के थे, एन ई पी–2020 ने दो प्रकार के यू जी डिग्री पाठ्यक्रम प्रस्तावित किए – 3 या 4 साल की अवधि के, इस अवधि के भीतर कई निकास विकल्पों और, उचित प्रमाणीकरण के साथ – उदाहरण के तौर पर एक साल पूरा करने के बाद एक प्रमाण पत्र व्यावसायिक पेशेवर क्षेत्रों सहित किसी अनुशासन या क्षेत्र में, दो साल के अध्ययन के बाद डिप्लोमा या तीन साल के कार्यक्रम के बाद स्नातक की डिग्री। हालाँकि, चार वर्षीय बहु–विषयक स्नातक कार्यक्रम पसंदीदा विकल्प होगा क्योंकि यह समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की पूरी श्रृंखला का अनुभव करने का अवसर देता है।

चूंकि भारत में 19–24 आयु वर्ग के 5% से कम कार्यबल ने औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त की है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में 52%, जर्मनी में 75% और दक्षिण कोरिया में 96% ने औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त की है, इसलिए यह निर्णय लिया गया कि व्यावसायिक शिक्षा चरणबद्ध तरीके से सभी स्कूल और उच्च शिक्षा संस्थानों में एकीकृत की जाएगी। कौशल वृद्धि पाठ्यक्रमों का उद्देश्य छात्रों की रोजगार क्षमता को बढ़ाने के लिए व्यावहारिक कौशल, व्यावहारिक प्रशिक्षण, सॉफ्ट कौशल आदि प्रदान करना है।

इस पृष्ठभूमि में, यह बताना उचित होगा कि दयालबाग़ भारत में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने में अग्रणी रहा है। मॉडल इंडस्ट्रीज की शुरुआत अक्टूबर 1917 में दयालबाग़ में हुई थी। 1921 में मॉडल इंडस्ट्रीज कार्यशालाओं में चयनित छात्रों के लिए स्कूल समय के बाद मैनुअल प्रशिक्षण शुरू किया गया था। इस प्रकार सौ से अधिक वर्षों से, व्यावसायिक प्रशिक्षण दयालबाग़ में हमारी शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग रहा है। जैसा कि सत्र 2023–2024 के लिए डी.ई.आई. के प्रॉस्पेक्टस में बताया गया है (पेज संख्या 85):

'पिछले कई वर्षों से, DEI देश में सबसे बड़े व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदाता के रूप में उभरा है। डी.ई.आई. को एम एच आर डी और यू पी सरकार द्वारा भी सरकारी प्रशिक्षण प्रदाता एजेंसियों में से एक के रूप में मान्यता दी गई है। दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ने सत्र 2015–16 से छह और 2016–17 से एक ट्रेड में बी.वोक कार्यक्रम शुरू किया है। संस्थान द्वारा अब 22 बी.वॉक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। ये कार्यक्रम यह सुनिश्चित करेंगे कि इन ट्रेडों में स्नातक करने वाले छात्रों के पास पर्याप्त ज्ञान और कौशल हो। विश्वविद्यालय ने पहले ही प्रशिक्षण उपकरण, मानव संसाधन, उद्योग भागीदारों और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ढांचे के मामले में अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा हासिल कर लिया है। बहु–बिंदु प्रवेश/निकास और प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली के साथ, संस्थान द्वारा डिज़ाइन किया गया पाठ्यक्रम व्यक्तियों की क्षमता और जरूरतों को साकार करने में उनके विकास का समर्थन करता है।'

NEP 2020 के अनुसार क्रेडिट मैपिंग के आधार पर यू जी सी द्वारा प्रस्तावित डिग्री–स्तरीय यूजी पाठ्यक्रमों का कैनवास बहुत व्यापक है और इसमें नीचे दिए गए पाठ्यक्रमों की कई श्रेणियाँ शामिल हैं।

S. No.	Category of Course	Minimum Credit Requirement	
		3 Year UG	4 Year UG
1.	Major (Core)	60	80
2.	Minor Stream	24	32
3.	Multidisciplinary	09	09
4.	Ability Enhancement Courses	08	08
5.	Skill Enhancement Courses	09	09
6.	Value-added Courses	06-08	06-08
7.	Summer Internship	02-04	02-04
8.	Research Project / Dissertation	-	12
	Total	**120**	**160**

कुल मिलाकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जिसका उद्देश्य बहु–विषयक और समग्र शिक्षा के माध्यम से अच्छे, विचारशील, सर्वांगीण और रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना है, जैसा कि अध्यक्ष, यू जी सी ने नोट किया है, शिक्षाविदों द्वारा इसका बहुत स्वागत हुआ है, हालांकि कुछ चिंता व्यक्त की गई है [1] कि (i) कौशल शिक्षा और प्रमुख क्षेत्र के अलावा अन्य शिक्षा की श्रेणियों पर जोर अधिक है, और (ii) रोजगार (employment) पर अधिक और नवाचार (innovation) पर कम जोर दिया गया है।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

संदर्भः

[1] Hema Raghavan, Foreign Universities in India: The Opening or Closing of Higher Education,University News, February 06-12-2023

सूचना केंद्रों से समाचार

करोल बाग केंद्र ने कैमेलिड्स के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष का जश्न मनाया

करोल बाग में डी.ई.आई. सूचना केंद्र ने हाल ही में कैमेलिड्स के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के उपलक्ष्य में एक आकर्षक कार्यक्रम का आयोजन किया। 28 जनवरी, 2024 को, छात्र, पूर्व छात्र, शिक्षक और छोटे बच्चे ऊंटों पर एक विशेष व्याख्यान के लिए एकत्र हुए। व्याख्यान, श्रीमती सिमी ग्रोवर द्वारा कुशलतापूर्वक दिया गया। जिसका उद्देश्य इन आकर्षक प्राणियों पर जश्न मनाना और उनके बारे में जागरूकता फैलाना है। विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों सहित विविध दर्शकों ने व्याख्यान के दौरान एक आकर्षक माहौल बनाया। श्रीमती सिमी ग्रोवर ने ऊंटों के विभिन्न पहलुओं पर अंतर्दृष्टि साझा की, जिससे इन अद्वितीय जानवरों के लिए जिज्ञासा और प्रशंसा की भावना को बढ़ावा मिला। सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए, व्याख्यान के बाद एक लघु प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया, जिससे सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया गया और साझा किए गए ज्ञान को मजबूत किया गया। इस कार्यक्रम ने शिक्षा और सामुदायिक जुड़ाव के महत्व की याद दिलाई, जिसने इसमें भाग लेने वाले सभी लोगों पर स्थायी प्रभाव छोड़ा।

डी.ई.आई. सूचना केंद्रों में संस्थापक दिवस समारोह

करोल बाग केंद्र में डी.ई.आई. के संस्थापक दिवस का महत्वपूर्ण अवसर छात्रों, पूर्व छात्रों, संकाय सदस्यों और विशिष्ट अतिथियों की एक बड़ी सभा द्वारा भव्य रूप से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत एक गंभीर विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ हुई, जिसे एक स्वर में गाया गया, जिससे आसपास के क्षेत्र में एक चिंतनशील माहौल बन गया।

कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण आकर्षण श्रद्धेय संस्थापक, डॉ एम.बी. लाल साहब के जीवन इतिहास पर प्रकाश डालने वाली एक संक्षिप्त प्रस्तुति थी। डी.ई.आई. की शिक्षा नीति के उद्देश्यों को उत्साहपूर्वक व्यक्त किया गया था, जो छात्रों को उन मार्गदर्शक सिद्धांतों की याद दिलाता है जिन्हें उनके द्वारा शुरू की गई शैक्षणिक यात्रा में अपनाया जाना चाहिए।

केंद्र प्रभारी ने सभी उपस्थित लोगों की उपस्थिति और योगदान को स्वीकार करते हुए हार्दिक धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत की गूंजती धुन के साथ हुआ। सौहार्द को और बढ़ाने के लिए, उत्सव को एक आनंदमय जलपान सत्र तक बढ़ाया गया, जिससे प्रतिभागियों को सार्थक बातचीत में शामिल होने और डी.ई.आई. बिरादरी के बीच संबंधों को मजबूत करने का मौका मिला। संक्षेप में, संस्थापक दिवस समारोह ने डी.ई.आई. में दूरदर्शी नेतृत्व की स्थायी विरासत पर जोर देते हुए श्रद्धांजलि और सामुदायिक निर्माण का एक समृद्ध मिश्रण प्रस्तुत किया।

अटलांटा सचना केंद्र ने फ्लॉरिडा, डलस और ह्यूस्टन में स्थित अपने सहयोगियों के साथ मिलकर संस्थापक दिवस पर वर्ष का अपना दूसरा अनुपम उत्सव मनाया। इस कार्यक्रम में अटलांटा शाखा सचिव, डी आर एस ए एन ए अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और डी आर एस ए एन ए सचिव के साथ सुपरमैन इवॉल्यूशनरी स्कीम के चालीस से अधिक बच्चों और वयस्कों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद बच्चों ने सम्मानित दयालु नेताओं की शिक्षाओं के बारे में जानकारीपूर्ण प्रस्तुतियाँ दीं, जिसमें मांस और शराब से बचने और कर्तव्यनिष्ठा से कर्तव्यों का पालन करने जैसे सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित किया गया। चर्चाओं में परम गुरु हुजूर मेहताजी महाराज और परम गुरू डॉ एम.बी. लाल साहब द्वारा निर्धारित छात्र–केंद्रित दिशानिर्देशों पर प्रस्तुतियां भी शामिल थीं, जिसमें जल्दी उठने, कुछ भी बर्बाद न करने और सादा जीवन और उच्च विचार जैसी आदतों पर जोर दिया गया था। डॉ. एम.बी. लाल साहब के जीवन और उपलब्धियों पर प्रकाश डालने वाले एक वर्चुअल गेम ने उत्सव में चार चांद लगा दिए। कार्यक्रम का समापन हमारे संस्थापक पिताओं के मार्गदर्शन का पालन करने की शक्ति के लिए सामूहिक प्रार्थना के साथ हुआ।

डी.ई.आई. आई सी टी सेंटर, **स्वामी नगर**, नई दिल्ली ने अपना संस्थापक दिवस उत्साह और उमंग के उल्लेखनीय प्रदर्शन के साथ मनाया। बी.एड., बी.कॉम, एम.कॉम, डिप्लोमा इन इंजीनियरिंग और सर्टिफिकेट इन टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग एंड प्रिंटिंग जैसे विविध कार्यक्रमों के छात्रों ने गर्व से अपनी परियोजनाओं, पोस्टरों और विशेष initiatives का प्रदर्शन किया। छात्रों ने आगंतुकों के सामने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए मनोरंजक खेल और प्रश्नोत्तरी और उत्पाद बिक्री का आयोजन किया। छात्रों के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कुछ वस्तुओं को भी बिक्री के लिए रखा गया। इस दिन केंद्र के कई पूर्व छात्रों की उपस्थिति भी देखी गई, जिन्होंने नए बैचों और केंद्र के कर्मचारियों के साथ फिर से जुड़ने के लिए विशेष रूप से तारीख चिह्नित की थी।

बेंगलुरु सेंटर में उत्पाद प्रदर्शनी–2024 का आयोजन किया गया

डी.ई.आई.–आई सी टी बैंगलोर ओ डी एल परिसर ने 3 फरवरी, 2024 को एक उत्पाद प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रदर्शनी दो खंडों में आयोजित की गई थी। पहले खंड में, मेंटर्स श्रीमती पी एस एम लक्ष्मी और श्रीमती पारुल श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में ड्रेस डिज़ाइनिंग और टेलरिंग और टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग और प्रिंटिंग के छात्रों द्वारा बनाए गए उत्पाद और एम. टेक व बी.टेक के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए एल ई डी बल्ब और अपने mentors श्री टी. प्रीतम, श्री रोहित एवं श्री सौरभ के मार्गदर्शन में विक्रय हेतु प्रदर्शित किये गये। दूसरे खंड में बैंगलोर केंद्र के लिए अनुमोदित कार्यक्रमों पर विशेष जोर देते हुए डी.ई.आई. कार्यक्रमों जैसे पी जी, यू जी, पी जी डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कार्यक्रमों के बारे में चार्ट प्रदर्शित किए गए। आगंतुकों को डी.ई.आई. की शिक्षा नीति, प्रत्येक कार्यक्रम के विवरण और इन कार्यक्रमों को नियमित रूप से आयोजित करने के उद्देश्य के बारे में बताया गया। जनता ने बड़ी संख्या में दौरा किया और उदारतापूर्वक उत्पाद खरीदे। इस आयोजन का उद्देश्य छात्रों को उद्यमशील कौशल से परिचित कराना था ताकि 'सीखने के दौरान कमाए अनुभव' को सक्षम बनाया जा सके और अधिक सृजन भी किया जा सके।

DEI केंद्रों में कुछ और कार्यक्रम

गादीरास (सुकमा) में बसंत Sports का आयोजन

12 फरवरी, 2024 को DEI प्रशिक्षण केंद्र, गादीरास (सुकमा) में सभी छात्रों, कर्मचारियों और स्थानीय ग्रामीणों के साथ बड़े उत्साह के साथ बसंत खेलों का आयोजन किया गया। श्री अनामी शरण, द्वितीय कमान 02 बटालियन सी आर पी एफ, श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट, श्री ओ पी बिश्नोई, सहायक कमांडेंट 188 बटालियन सी आर पी एफ, श्रीमती पत्रिका पटेल, श्रीमती. चौहान, स्व–सहायता समूह के कार्यकर्ता इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में से थे। कार्यक्रम की शुरुआत संस्कृत में विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद एथलेटिक्स में तीन पैरों वाली दौड़, 50 मीटर दौड़, स्पून रेस, छात्रों के लिए नीडिल रेस और स्थानीय समुदाय के बच्चों के लिए मेंढक दौड़ शामिल थी। अंत में श्री. अनामी शरण ने छात्रों को बसंत पंचमी के महत्व की जानकारी दी।

14 फरवरी, 2024 को, बसंत पंचमी के दिन, केंद्र को रंगोली, पीले फूलों और कृत्रिम फूलों से सजाया गया था। छात्रों द्वारा देशभक्ति गीत, दयालबाग़ स्काउट गीत और प्रेरक भाषण सहित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अंत में विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये।

अटलांटा सेंटर में बसंत समारोह 2024

बसंत की भावना में, अटलांटा शाखा ने सत्संग संस्कृति और दयालबाग़ जीवन शैली के मूल्यों के प्रति सच्चे रहते हुए, अपने सदस्यों के समग्र विकास के उद्देश्य से ग्यारह नवीन initiatives की शुरुआत के साथ विकास की यात्रा शुरू की। ये पहल विविध प्रकार के हितों को पूरा करती हैं, यह सुनिश्चित करती हैं कि हर आयु वर्ग के लिए कुछ न कुछ मूल्यवान हो। सहयोग को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन की गई इन initiatives से न केवल अटलांटा शाखा के सदस्यों को लाभ होगा बल्कि भविष्य में व्यापक उत्तरी अमेरिकी समुदाय से जुड़ने का भी लक्ष्य होगा। कार्यक्रमों की विस्तृत श्रृंखला इस प्रकार है:

सभी के लिए चिकित्सा शिक्षा: पूरे समुदाय में स्वास्थ्य साक्षरता और चिकित्सा अध्ययन को बढ़ावा देना; एस टी ई एम (STEM) कार्यक्रम: विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के साथ जुड़ाव को प्रोत्साहित करना; संत सुपरमैन उपवन: तीन सप्ताह से बारह वर्ष की आयु के बच्चों के आध्यात्मिक और व्यक्तिगत विकास के लिए समर्पित स्थान; वैज्ञानिक चर्चा मंच: पूछताछ और साक्ष्य–आधारित समझ की संस्कृति को बढ़ावा देना; सभी के लिए भगवद् गीता: इस पवित्र ग्रंथ के कालातीत ज्ञान को सभी के लिए सुलभ बनाना; सहायता समिति: अटलांटा शाखा के सदस्यों को सहायता और संसाधन प्रदान करना और उन्हें दयालबाग़ से नवीनतम अपडेट के बारे में सूचित करना; सामुदायिक आउटरीच: सेवा और सहयोग के माध्यम से व्यापक समुदाय (सतसंग के बाहर) तक अपना हाथ बढ़ाना; महिला सशक्तिकरण: लक्षित कार्यक्रमों के माध्यम से समुदाय में महिलाओं की भूमिका को ऊपर उठाना; एग्रो सेल: कृषि ज्ञान को बढ़ाना और टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देना; शब्द पाठ: अंग्रेजी, संस्कृत और हिंदी में पाठ के माध्यम से हमारे पवित्र पाठों का जश्न मनाना; केंद्रीय भंडार: ज्ञान और सीखने के लिए एक साझा संसाधन का निर्माण।

18 फरवरी, 2024 को आयोजित उद्घाटन समारोह में प्रतिबद्धता और सामुदायिक भावना का प्रदर्शन किया गया एवं समन्वयकों ने वर्ष भर के लिए अपनी योजनाएं प्रस्तुत कीं, जिसमें सामने आने वाले उद्देश्यों और गतिविधियों का विवरण दिया गया। समर्थन में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, डी आर एस ए एन ए और अटलांटा सचिव के साथ–साथ अटलांटा शाखा के सुपर ह्यूमन, युवा और वयस्क भी शामिल थे। कार्यक्रम का समापन एक प्रार्थना के साथ हुआ, जिसमें सभी सदस्यों को इन प्रयासों के सफल निष्पादन के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुशासन प्रदान करने के लिए दिव्य मार्गदर्शन की मांग की गई।

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

इस वर्ष की शुरुआत में आयोजित DEI एलुमनाई कनेक्ट न केवल एक पुनर्मिलन था, बल्कि छात्रों, पूर्व छात्रों, संकाय और प्रशासकों के बीच साझेदारी का एक सफल उत्सव था, जो संस्थान के मिशन और मूल्यों को बनाए रखने के लिए एक साथ काम करते हैं। इस अंक में शामिल लेख उस जोश और उत्साह को रेखांकित करते हैं जिनके साथ पूर्व छात्र अपने अल्मा मेटर के विकास और सफलता के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं। इस अवसर को और भी खास बना दिया गया क्योंकि यह बैकुंठ धाम में यमुना नदी के तट पर हुआ। सर्वोच्च पिता की सौम्य और दयालु उपस्थिति से धन्य, यह कार्यक्रम एक मजबूत समुदाय और संस्कृति के निर्माण में एक और मील का पत्थर है। जैसे–जैसे दिन गर्म होते हैं और फसल का मौसम जोर पकड़ता है, वसंत के रंग रंगों के त्योहार की शुरुआत करते हैं। पारंपरिक रूप से बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक, होली के रंग खुशी, वसंत ऋतु और इस धरती पर जीवन के उत्सव के रूप में शाश्वत और चिरस्थायी आनंद के भी प्रतीक हैं।

हम अपने पाठकों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं! कृपया अपनी टिप्पणियाँ और विचार aadeisnewsletter@gmail.com पर साझा करें ।आपकी प्रतिक्रिया की बहुत सराहना की जाएगी।

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट पूर्व छात्र मिलन समारोह–2024

सूरज भारद्वाज

बी बी एम (बैच 2003), एम बी ए (बैच 2024), डी.ई.आई.

वर्तमान में, जी.एम., एच.सी.एल. टेक्नोलह्जीज़

जैसे ही सुबह के सूरज की किरणें यमुना के शांत किनारों पर पड़ी, हमने खुद को दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के पूर्व छात्र मिलन समारोह के लिए उत्सुकता, उत्साह और इंतजार की भावनाओं में पाया। हमारे अल्मा मीटर के परिचित परिवेश ने पुरानी यादों को ताजा कर दिया, जिससे मुझे, हमारे बेफिक्र और खुशहाल कॉलेज के दिनों की अनगिनत स्मृतियां याद आ गईं। साथी स्नातकों से मिलते हुए वातावरण में उत्साह की एक स्पष्ट गूंज थी। पुराने दोस्तों के फिर से मिलने और नए मित्र बनाने की खुशी से चेहरे मुस्कुराहट और हंसी से चमक उठे। इतने साल बीत जाने के बावजूद, हमारे बीच का सौहार्द पहले की तरह ही मजबूत रहा।

इस पूर्व छात्र मिलन समारोह को वास्तव में विशेष बनाने वाली बात थी सेवा की भावना, जो सुबह से ही कार्यक्रम में व्याप्त थी। सेवा, या निस्वार्थ सेवा, एक मूल मूल्य है जो दयालबाग में हमारे समय के दौरान हमारे अंदर गहराई से समाहित हो गया था। मेरे साथी पूर्ण छात्रों को इस कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित करने के लिए अपना समय और प्रयास समर्पित करते देखना उत्साहजनक था। हममें से कुछ लोग रसद तैयार करने में व्यस्त थे, जबकि अन्य मुस्कुराते हुए भोजन परोसने में शामिल थे। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि जिसमें हम सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया, वह थी यमुना की सफाई जो रा धा स्व आ मी सतसंग सभा, दयालबाग़ मुख्यालय द्वारा किए गए यमुना नदी के पुनरुद्धार परियोजना का हिस्सा है।

परम पूज्य कृपालु हुज़ूर की कृपापूर्ण उपस्थिति से धन्य, जिनकी कृपा और दया की आभा ने इस अवसर पर आनंद और श्रद्धा का वातावरण प्रदान किया, जिससे हम सभी को प्रेम, सद्भाव, भक्ति और निस्वार्थ सेवा के सिद्धांतों से युक्त दयालबाग़ जीवन शैली को अपनाने की प्रेरणा मिली। पृष्ठभूमि के रूप में शांत यमुना नदी के साथ, बातचीत का प्रवाह मुक्त रूप से, हंसी–मजाक से भरा हुआ था। और काम करते हुए भी हमने यादें साझा कीं। हमने अपने कॉलेज के दिनों को याद किया – सुबह की कक्षाएं, देर रात तक पढ़ाई और सौहार्द के क्षण जो हमारे साथ बिताए समय को प्रदर्शित करते थे। जब हम संस्थान में पढ़ रहे थे, तब कृपालु हुज़ूर निदेशक थे, और मीट में उनकी उपस्थिति एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में काम करती थी, जो हमें हमारे अल्मा मेटर द्वारा हममें डाले गए मूल्यों की याद दिलाती थी। उनके ज्ञान के शब्द गहराई से गूंजते थे, हमारे आसपास की दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालने की हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करते थे।

प्रातःकाल, हमारे मन में कृतज्ञता की भावना साफ झलक रही थी – हमें जो शिक्षा मिली थी उसके लिए कृतज्ञता, बनी हुई दोस्ती के लिए कृतज्ञता, और दयालु हुजूर की दिव्य और दयालु उपस्थिति का आनंद लेने के अवसर के लिए कृतज्ञता। यह दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थान के हमारे जीवन पर पड़ने वाले गहरे प्रभाव की याद दिलाता है, जिसने हमें एक शिक्षित व्यक्ति बनाया है जो हम आज हमें सम्मान की प्राप्ति दिलाता है।

लेकिन पूर्व छात्र सम्मेलन सिर्फ बिताये हुए लम्हों के बारे में नहीं था; यह आगे आने वाली चुनौतियों के बारे में भी था। यह हमारे साथी स्नातकों की उपलब्धियों का जश्न मनाने और एक–दूसरे को नई ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए प्रेरित करने का मौका था। जब हमने आजीविका की उपलब्धियों और व्यक्तिगत जीत की कहानियों का आदान–प्रदान किया, तो मैं अपने साथियों की विविध उपलब्धियों और वर्तमान छात्रों के उज्ज्वल और आशाजनक भविष्य पर गर्व महसूस करने से खुद को रोक नहीं सका। हमारे अनुभवों से सीखने के लिए उत्सुक समुदाय और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए तैयार इन युवा प्रतिभाशाली योग्यताओं के साथ बातचीत करना खुशी की बात थी।

जैसे–जैसे सूरज आसमान में ऊपर चढ़ता गया और सुबह दोपहर में बदल गई, हम यमुना के शांत किनारों को अलविदा कहते हुए अपने साथ साझा की गई यादें और मजबूत होते गए रिश्ते लेकर गए। पूर्व छात्र मिलन दयालबाग की स्थायी भावना का एक प्रमाण था, जिसने हमें हमारे साझा अनुभवों में एकजुट किया और हमें परम पूज्य हुजूर के दयालु मार्गदर्शन में प्रेम और सेवा के मार्ग पर चलते रहने के लिए प्रेरित किया कि एक समय में सेवा के एक कार्य से दुनिया में बदलाव लाया जा सकता है।

डी.ई.आई. की मेरी यादें

अचिंत निगम

बिजनेस मैनेजमेंट में स्नातक (बैच 2003)

वर्तमान में, सहायक निदेशक–प्रतिभा टीम, EYGDS

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (DEI) के पूर्व छात्र के रूप में, मैं अपने कॉलेज के आनंदित भरे, सीखने और चुनौतियों से भरे हुए दिनों को याद करता हूँ। साथ ही, मैं अपने व्यक्तित्व को आकार देने में निभाई गई भूमिका की सराहना करता हूँ। उस समय मुझे पता नहीं था कि एक संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास जीवन के कई पहलुओं को शामिल करता है, जिसमें शिक्षा, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक जिम्मेदारी और नेतृत्व आदि शामिल हैं। हमारे समर्पित शिक्षकों ने व्यक्तित्व के अमूर्त पहलुओं – नैतिकता, मूल्य और भावनात्मक बुद्धिमत्ता – को हमारे पाठ्यक्रम में सहजता से पिरोया। सहानुभूतिपूर्ण, सम्मानजनक और समझदार बनना सिखाए जाने से, हमें जटिलताओं को संभालना सिखाया और उन्हें प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना सिखाया उत्कृष्टता की खोज में, नैतिक मूल्यों के महत्व को नजरअंदाज करना आसान है।

पाठ्क्रम गतिविधियों की श्रृंखला ने नए अवसर प्रदान किए, जिससे हमारे व्यक्तित्व में और सुधार आया। उन्होंने हमारी नेतृत्व क्षमता, टीम भावना, लचीलापन, खेल भावना और रचनात्मकता को उभारा। सामुदायिक सेवाओं और पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी ने भी हममें सामाजिक जिम्मेदारी की भावना प्रदान की।

विश्वविद्यालय अनुसंधान और विकास गतिविधियों पर भी विशेष ध्यान देता है, जिसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वित्त पोषण एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित कई परियोजनाएं शामिल हैं। यह मूल्य–आधारित शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने के अपने मिशन के साथ जारी है, जिसका उद्देश्य व्यापक शैक्षणिक समुदाय और समाज में योगदान करना है।

दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थान केवल एक शैक्षणिक संस्थान नहीं है; यह एक ऐसा स्थान है जहाँ ज्ञान बुद्धि से मिलता है, जहाँ सीखने से ज्ञानोदय होता है, और जहाँ शिक्षा चरित्र निर्माण को प्रेरित करती है। यह समाज और शैक्षणिक दुनिया में सार्थक योगदान देते हुए हजारों छात्रों के जीवन को आकार देना जारी रखता है। निस्संदेह, DEI भारत के शैक्षिक स्पेक्ट्रम में एक चमकता सितारा है।

आज इस पर विचार करते हुए, मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मेरे कॉलेज के वर्ष केवल अकादमिक शिक्षा के बारे में नहीं थे। इसके बजाय, वे एक परिवर्तनकारी यात्रा थी जिसने मुझे बढ़ने, विकसित होने और एक संतुलित और परिपक्व व्यक्ति के रूप में विकसित होने में मदद की।

सखी बोलती हैः मेरा दूसरा जन्म और धन्य जीवन

दंतु चरणदासी

एम.ए धर्मशास्त्र बैच (2020–21), डी.ई.आई.; सेवानिवृत्त संयुक्त सचिव, विदेश मंत्रालय और पर्थ, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया और उत्तरी क्षेत्र में भारत की महावाणिज्यदूत

सखी– अगर मैं बोल सकती
जन्म जब लिया था न थी मैं यह जानती।
कोई और बताता तो शायद नही मानती।

पली बढ़ी मैं अपनों में राजस्थान की गालियों मे।
खाना पीना सोना और झूमती थी रंगरलियों मे।
फिर अचानक आया वो पल जो लगता है अब बीता कल।
लाद हमे लाए दूर देश आगरा मे स्थित दयालबाग़ को।

कर्म भारी थे और लगी चोट रीड़ की हड्डी को।
न था यह ज्ञान कि यह चोट बना देगी मुझे दाता की दुलारी।
सारा जग छोड़ लग गए कायनात को जोड़ दिया हम पर दया बिचारी।

कानों मे बजने लगी शब्दों की बौछार।
धुन सुन भूल गई दर्द और करती विचार।
पाँच शब्दः
'रा' से 'निरंजन', धः/'धा' से 'ओम',
'स्व' से 'रारंग', 'आ' से 'सोहम',
'मी' से 'सत्त',
और फिर 'रा धः/धा स्व आ मी'।

मेरा तो हो गया जन्म सुफल।
गया डर और काल कर्म हुए विफल।

पहली बार हुआ, यह महसूस।
गया जन्म एक मिला दूजा हुज़ूर।
क्या यही सफर कर देगा? यह कथनी मशहूर।
''न जाएगी यह धार पलट जब तक न जीव जंतु सब उतरें पार''।

धन्य धन्य हैं भाग हमारे,
बाद आपके किया दुनिया ने यह साल नाम हमारे।

नही यह जानते कि हम हो गए सब ऊंट सदा गुलाम तुम्हारे।
हे सखियों आओ नाचें गाएँ संग धूम मचायें।
पहली बसंत और होली पर धर धर सीस नवाएं।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई.

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन

मुख्य संपादक

प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक

डॉ. सोना दीक्षित

डॉ. सोनल सिंह

डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी

डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य

डॉ. चारु स्वामी

डॉ. नेहा जैन

डॉ. सौम्या सिन्हा

श्री आर.आर. सिंह

प्रो. प्रवीण सक्सेना

प्रो. वी. स्वामी दास

डॉ. रोहित राजवंशी

डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान

अनुवादक

डॉ. नमस्या

डॉ. निशीथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई.
(डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन

प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान

प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल

डॉ. सोनल सिंह

डॉ. मीना पायदा

डॉ. लॉलीन मल्होत्रा,

डॉ. बानी दयाल धीर

श्री राकेश मेहता

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni
(AADEIs & AAFDEI)

संपादक

प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति

डॉ. सरन कुमार सतसंगी,

प्रो. साहब दास

डॉ.बानी दयाल धीर

श्रीमती शिफाली सत्संगी

श्रीमती अरुणा शर्मा

डॉ.स्वामी प्यारी कौड़ा

डॉ. गुरप्यारी भटनागर

डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालय:
पहली मंजिल, 63,
नेहरू नगर,
आगरा –282002

पंजीकृत कार्यालय:
108, साउथ एक्स प्लाजा –1,
साउथ एक्सटेंशन पार्क II,
नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशन: दयालबाग़ प्रेस